ॐ

॥ स्वामी गजाननानन्द तीर्थ ॥

श्रीः

पांडव गीता

भाषा टीका सहित

मु. व प्र.-किशनलाल द्वारकाप्रसाद,

बम्बई भूषण यन्त्रालय मथुरा।

* श्रीः *

पाण्डव गीता

भाषा टीका सहितः ।
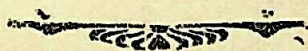
जिसको

किशनलाल द्वारकाप्रसाद,

ने

अपने बम्बई भूषण यन्त्रालय मथुरा में

छापकर प्रकाशित किया ।

सन् १९३८ ई०

गजाननानन्दतीर्थ

॥ श्री ॥

अथ

पाण्डवगीता ।

भाषाटीकासहिता।

प्रार्थना ।

प्रह्लादनारदपराशरपुंडरीकव्यासाम्बरीष-
शुकशौनकभीष्मकाद्याः ॥ रुक्मांगदार्जु-
नवसिष्ठविभीषणाद्या एतानहं परमभागव-
तान्नमामि ॥ १ ॥

प्रह्लाद नारदमुनि, पाराशरऋषि, पुण्डरीक व्यास, राजा अम्बरीष शुकदेव, शौनक ऋषि; भीष्म, रुक्मांगद, अर्जुन, वशिष्ठ और विभीषण आदि भगवान के बड़े भक्तोंको नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥

लोमहर्षण उवाच।

धर्मोविवर्द्धति युधिष्ठिरकीर्तनेनपापं प्रणश्य-
तिवृकोदरकीर्त्तनेन ॥ शत्रुर्विनश्यतिधनं-
जयकीर्तनेनमाद्रीसुतौकथयतांनभवंतिरोगाः २

लोमहर्षण पाण्डवों की स्तुति करते हुए कहते हैं कि युधिष्ठिर का नाम लेने से धर्म बढ़ता है भीमसेन का नाम लेने से पाप दूर होता है, अर्जुनका नाम लेने से शत्रु का नाश होता है और माद्रीसुत अर्थात् नकुल और सहदेवका नाम लेने से कोई रोग नहीं होते॥ २ ॥

ब्रह्मोवाच।

येमानवाविगतरागपराऽपरज्ञानारायणंसुर-
गुरुंसततंस्मरन्ति ॥ ध्यानेनतेनहतकिल्बि-
षचेतनास्ते मातुः पयोधररसंनपुनः पिबन्ति॥

ब्रह्माजी कहते हैं॥ जो मनुष्य राग और द्वेष से रहित हों, देवताओं के गुरु अर्थात् सब देवताओं में श्रेष्ठ भगवान का सदा स्मरण करते हों उस ध्यान से उनके सब पाप दूर होजाते हैं और वे फिर माता का दूध नहीं पीते अर्थात् फिर संसार में जन्म नहीं लेते ॥ ३ ॥

इन्द्र उवाच।

नारायणोनामनरोनराणां प्रसिद्धचौरः कथितः पृथिव्याम्॥ अनेकजन्मार्जितपापसंचयं हरत्यशेषंस्मृतमात्रएववयः॥ ४॥

इन्द्र कहते हैं। पृथ्वी में नारायणके नामको चौर प्रसिद्ध कहते हैं जो स्मरण करते ही अनेक जन्मों के संचित किये हुए पापों को हर लेता है॥ ४॥

युधिष्ठिर उवाच।

मेघश्यामंपीतकौशेयवस्त्रं श्रीवत्सांकंकौस्तुभोद्भासिताङ्गम्॥ पुण्योपेतंपुण्डरीकायताक्षंविष्णुंवंदेसर्वलोकैकनाथम्॥ ५॥

युधिष्ठिर कहते हैं॥ मेघके समान जिनको श्याम वर्ण और पीले रेशमी वस्त्र धारण किये हुए श्रीवत्स जिनका भृगुलताका है चिन्ह और जिनका अंग कौस्तुभमणि से प्रकाशित है और जिनके पुण्य रूपी श्वेत कमल के समान नेत्र हैं ऐसे सब लोकों के एक स्वामी विष्णु को मैं नमस्कार करता हूं।

भीमसेन उवाच।

जलौघमग्नासचराऽचराधरा विशाणकोटचाऽ-

खिलविश्वमूर्तिना ॥ समुद्धृतायेनवराहरूपिणा
समेस्वयम्भूभगवान् प्रसीदतु ॥ ६ ॥

भीमसेन कहते हैं ॥ जलमें डूबी हुई चर अचर सहित सब पृथिवी को जिस विश्वरूप भगवान ने वाराह रूप धारण करके अपनी डाढ़ की नोंक से निकाला है वह स्वयंभू श्रीकृष्ण भगवान् मेरे ऊपर प्रसन्न हों ॥६॥

अर्जुन उवाच।

अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमव्ययंविभुंप्रभुंभावित
विश्वभावनम् ॥ त्रैलोक्यविस्तारविचारकारकं
हरिंप्रपन्नोऽस्मिगतिंमहात्मनाम् ॥७॥

अर्जुन कहते हैं—जो न तो ध्यान में आते हैं और न प्रकट है और न जिनका अन्त है तथा अविनाशी और समर्थ तथा सर्वव्यापी और तीनों लोकों के बिस्तार के विचारनेवाले तथा महात्माओं की गति ऐसे जो प्रभु हरि हैं उनकी मैं शरण में हूँ ॥ ७ ॥

नकुल उवाच।

यदिगमनमधस्तात्कालपाशानुबंधाद्यदि च
कुलविहीने जायतेपक्षिकीटे ॥ क्रमिशत-

मपिगत्वाध्यायतेचान्तरात्मामम भवतुत्हृदि-
स्थाकेशवेभक्तिरेका ॥ ८ ॥

नकुल कहते हैं—जो कालरूपी फांसी के बन्धन में पड़के नरक में जावे और जो कुलहीन पक्षी कीड़ा आदि में जन्मे और सैकड़ों कीड़ों में भी जाकर अन्तरात्मा का ध्यान करके यही मांगता हूँ कि केशव की मुख्य भक्ति मेरे हृदय में होवे ॥ ८ ॥

सहदेव उवाच।

तस्ययज्ञवराहस्यविष्णोरतुलतेजसः ॥
प्रणामंयेप्रकुर्वन्तितेषामपिनमोनमः ॥९॥

सहदेव कहते हैं—यज्ञ वाराह का रूप धरने वाले बड़े तेजस्वी बिष्णु को नमस्कार करते हैं उनको भी मेरा बारम्बार नमस्कार है ॥ ९ ॥

कुन्त्युवाच।

स्वकर्मफलनिर्दिष्टांयांयांयोनिंव्रजाम्यहम्।
तस्यांतस्यांहृषीकेशत्वायभक्तिर्दृढास्तुमे ॥१०॥

कुन्ती कहती है—अपने कर्मफल द्वारा बताई हुई जिस जिस योनि में मैं जाऊँ हे हृषीकेश! उसी उसमें तुम्हारे में मेरी दृढ़ भक्ति होय ॥१०॥

माद्र्युवाच।

कृष्णेरताःकृष्णमनुस्मरन्तिरात्रौचकृष्णंपुन
रुत्थिताये ।। तेभिन्नदेहाः प्रविशन्ति कृष्णे
हविर्यथामन्त्रहुतंहुताशे ।।११।।

माद्री कहती है—जो कृष्ण में लीन है और उन्हीं का स्मरण करते हैं रात्रि में तथा फिर उठके अर्थात् दिन में जे देह छूटने पर कृष्ण में ऐसे प्रवेश करते हैं जैसे मन्त्र से होमी गई हवि अर्थात् जैसे घी अग्नि में ।।११।।

द्रौपद्युवाच।

कीटेषुपक्षिषुमृगेषुसरीसृपेषुरक्षःपिशाचमनु
जेष्वपियत्रतत्र ।। जातस्यमेभवतुकेशवत्वत्प्र
सादात्त्वय्येवभक्तिरचलाऽव्यभिचारिणीच।

द्रौपदी कहती है—हे केशव ! कीड़ों, पक्षियों, मृगों, राक्षसों, पिशाचों और मनुष्यों में तथा और जहां कहीं मैं उत्पन्न होऊँ वही भक्ति तुम्हारे प्रसाद से तुम्हीं में सदा अचल होवे ॥ १२ ॥

सुभद्रोवाच।

एकोऽपिकृष्णस्यकृतः प्रणामोदशाश्वमेधाऽ

वभृथेनतुल्यः ॥ दशाश्वमेधोपुनरेतिजन्म
कृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय ॥१३॥

सुभद्रा कहती है—कृष्ण का एकबार भी किया हुआ प्रणाम दश अश्वमेध यज्ञ के समान है, परन्तु दश अश्वमेधवाला फिर जन्म लेता है और कृष्ण को प्रणाम करने वाला फिर संसार में नहीं आता ॥१३॥

अभिमन्युरुवाच ।

गोविन्दगोविन्दहरे मुरारेगोविन्दगोविन्द
मुकुन्दकृष्ण ॥ गोविन्दगोविन्दरथांगपाणे
गोविन्दगोविन्दनमामिनित्यम् ॥ १४ ॥

अभिमन्यु कहते हैं—हे गोविन्द हे गोविन्द, हे हरे, हे मुरारे, हे गोविन्द, हे गोविन्द, हे मुकुन्द, हे कृष्ण, हे गोविन्द हे गोविन्द, हे रथांगपाणे अर्थात् चक्रपाणी हे गोविन्द हे गोविन्द मैं आपको सदा प्रणाम करता हूँ मेरे ऊपर कृपा रखना ॥१४॥

धृष्टद्युम्न उवाच ।

श्रीरामनारायणवासुदेवगोविन्दवैकुण्ठ-

मुकुन्दकृष्ण ॥ श्रीकेशवानन्तनृसिंहविष्णो।
मांत्राहिसंसारभुजंगदष्टम् ॥ १५ ॥

धृष्टद्युम्न कहते हैं। हे श्रीराम नारायण वासुदेव गोविन्द वैकुण्ठ मुकुन्द कृष्ण श्रीकेशव अनन्त नृसिंह विष्णु संसाररूपी सांप द्वारा दोषित मुझको बचाइये ॥ १५ ॥

सात्यकिरुवाच।

अप्रमेयहरेविष्णोकृष्णदामोदराच्युत ॥
गोविन्दाऽनन्तसर्वेशवासुदेवनमोस्तुते ॥१६॥

सात्यकि कहते हैं। हे अप्रमेय! अर्थात् प्रमाण रहित हरि विष्णु कृष्ण दामोदर अच्युत गोविन्द अनन्त सबके स्वामी वासुदेव तुमको नमस्कार है ॥ १६ ॥

उद्धव उवाच।

वासुदेवंपरित्यज्य योन्यदेवमुपासते ॥
तृषितोजाह्नवीतीरेकूपंखनतिदुर्मतिः ॥१७॥

उद्धवजी कहते हैं॥ वासुदेव भगवान को तजकर जो और देवकी उपासना करता है उसकी दशा उस दुष्टमति के समान है जो तट पर प्यासा होकर कुआ खोदता है ॥१७॥

धौम्य उवाच ।

अपांसमीपेशयनासनस्थिते दिवाचरात्रौ च यथाधिगच्छताम् ॥ यद्यस्तिकिञ्चित्सुकृतं-कृतंमयाजनार्दनस्तेनकृतेनतुष्यतु ॥ १८ ॥

धौम्य ऋषि कहते हैं । मने जलके समीप सोवे हुए व आसन में दिनमें अथवा रात में भी कुछ पुण्य किया होवे तो उससे जनार्दन भगवान सन्तुष्ट अर्थात् प्रसन्न होवे ॥ १८ ॥

संजय उवाच ।

आर्त्ताविषण्णाः शिथिलाश्चभीताघोरेषुव्या-घ्रादिषुवर्त्तमानाः ॥ संकीर्त्यनारायणशब्द-मात्रंविमुक्तदुःखास्सुखिनोभवन्ति ॥ १९ ॥

संजय कहते हैं ॥ पीडित, दुःखी शिथिल, और भयभीत और घोर व्याघ्र आदि जीवों में स्थित हैं वे सब मनुष्य नारायण शब्द मात्र का उच्चारण करके दुःख से छूटकर सुखी होजाते हैं ॥ १९ ॥

अक्रूर उवाच ।

अहमस्मिनारायणदास दासो दासस्यदास

स्यचदासदासः ॥ अन्योनईशोजगतोन-
राणां तस्मादहंधन्यतरोस्मिलोके ॥ २० ॥

अक्रूरजी कहते हैं ॥ मैं नारायण के दासों के दासों का दास हूं नारायण के सिवाय और कोई जगत्के मनुष्यों का स्वामी नहीं है इससे मैं लोक में अति धन्य हूं ॥२०॥

विराट उवाच।

वासुदेवस्ययेभक्ताःशान्तास्तद्गतचेतसः ॥
तेषांदास्यदासोऽहंभवेयंजन्मजन्मनि ॥ २१ ॥

विराट राज कहते हैं ॥ शान्त और उन्हीं में चित्त लगाने वाले जो वासुदेव के भक्त हैं मैं उनके दासों के दासों का दास जन्म जन्मातर तक होऊं ॥ २१ ॥

भीष्म उवाच।

विपरीतेषुकालेषुपरिक्षीणेषुबन्धुषु ॥
त्राहिमांकृपयाकृष्णशरणागतवत्सल ॥ २२ ॥

भीष्मजी कहते हैं ॥ समय के लोटजाने पर और भाई बन्धुओं के नाश होजाने पर हे शरणागतको प्रेम करनेवाले कृष्णजी कृपा करके मेरी रक्षा करो ॥ २२ ॥

द्रोणाचार्य उवाच।

येयेहताश्चक्रधरेणदैत्यास्त्रैलोक्यनाथेनज-

नार्द्दनेन ॥ तेतेगता विष्णुपुरींनरेंद्र
क्रोधेपिदेवस्यवरेणतुल्यः ॥ २३ ॥

द्रोणाचार्य जी कहते हैं—चक्र धारण करने वाले तीनों लोकों के नाथ जनार्दन द्वारा जो जो दैत्य मारे गये हैं वे सब विष्णुलोक को गये, देव का क्रोध भी वरे के समान है ॥२३॥

कृपाचार्य्य उवाच।

मज्जन्मनःफलमिदंमधुकैटभारे मत्प्रार्थनीय-
मदनुग्रहएवएव ॥ त्वद्भृत्यपरिचारकभृत्य-
भृत्यभृत्यस्यभृत्यइतिमांस्मरलोकनाथ॥२४॥

कृपाचार्य जी कहते हैं—हे मधुकैटभनाम दैत्यों के शत्रु! मेरे जन्म का यही फल है और मेरा वांछित अनुग्रह यही है कि आपके भृत्यों के भृत्य तथा उन सेवकों के भृत्यों के भृत्य उनके सेवकों का सेवक जो मैं हूँ हे लोक-नाथ! इसे स्मरण में रक्खो ॥२४॥

अश्वत्थामोवाच।

गोविन्दकेशवजनार्दनवासुदेवविश्वेश-
विश्वमधुसूदनविश्वरूप ॥ श्रीपद्मनाभ

पुरुषोत्तमदेहिदास्यनाराय णऽच्युतनृसिंह-
नमोनमस्ते ॥ २५ ॥

अश्वत्थामाजी कहते हैं ॥ हे गोविन्द ! हे केशव ! हे जनार्दन ! हेवासुदेव ! हे विश्वके स्वामी हेविश्व ! और हे विश्वरूप अर्थात तुम्हारा ही रूप है हे श्रीपद्मनाभ ! हे पुरुषोत्तम ! मुझे दास भाव दो और हे अच्युत अर्थात् अविनाशी हे नृसिंह तुमको बारबार नमस्कार है ॥

कर्ण उवाच ।

नान्यंवदामिनशृणोमिनचिन्तयामिनान्यं
स्मरामिनभजामिनचाश्रयामि॥भक्त्या-
त्वदीयचरणांबुजमादरेणश्रीश्रीनिवास-
पुरुषोत्तमदेहिदास्यम् ॥ २६ ॥

कर्ण कहते हैं॥ न कहता हूं न सुनता हूं न चिंतवन करता हूं न स्मरण करता हूं न भजता हूं और न आश्रय लेता हूं केवल भक्ति से आदर पूर्वक आपके चरण कमल का ध्यान रखता हूं हेश्रीयुत् श्रीनिवास ! हे पुरुषो-त्तम ! मुझे दासभाव दीजिये ॥६॥

धृतराष्ट्र उवाच ।

नमोनमःकारणबामनायनारायणायामितविक्रमाय

श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधरायनमोऽस्तुतस्मैपुरुषोत्तमाय

धृतराष्ट्र कहते हैं। कारणसे वामन रूप धरनेवाले जो आप हैं उनको वार वार नमस्कार है। और नारायण तथा बडे पराक्रमी और श्रीयुत शार्ङ्ग धनुष, सुदर्शन चक्र नन्दक खड्ग और कौमोद की गदा के धारण करने वाले ऐसे उन पुरुषोत्तम को मेरा नमस्कार है ॥२७॥

गान्धार्य्युवाच ।

त्वमेवमाताचपितात्वमेवत्वमेवबंधुश्चसखात्वमेव॥
त्वमेवविद्याद्रविणंत्वमेवत्वमेवसर्वंममदेवदेव।२८।

गान्धारी कहती है॥ हे कृष्ण! तुमही माताहो और तुमही पिता हो और तुमही बंधु हो और तुमही मित्र हो तुमही विद्या हो, तुमही धन हो, हे देवदेव महाराज! मेरे तो तुमही सब कुछ हो ॥२८॥

द्रुपद उवाच।

यज्ञेशाच्युतगोविन्दमाधवाऽनन्तकेशव ॥
कृष्ण विष्णोहृषीकेशवासुदेवनमोस्तुते २९॥

द्रुपद राजा कहतेहैं। हे यज्ञके स्वामी, हेअच्युत, हेगोविन्द हे माधव, हे अनन्त, हे केशव, हे कृष्ण, हे विष्णो, हे हृषी-

केश ! अर्थात् इन्द्रियों के स्वामी, हे वासुदेव ! तुमको नमस्कार है ॥२९॥

जयद्रथ उवाच ।

नमः कृष्णाय देवाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
योगेश्वराययोगायत्वामहंशरणंगतः ॥३०॥

जयद्रथ कहते हैं--जो ब्रह्म रूप है और जिनकी शक्ति अनन्त ऐसे कृष्णदेव को मेरा नमस्कार है योगेश्वर तथा योगरूप जो आप हैं उनकी शरण में मैं आया हूँ।

विकर्ण उवाच ।

कृष्णायवासुदेवायदेवकीनन्दनायच ॥
नंदगोपकुमारायगोविन्दायनमोनमः ॥३१॥

विकर्ण कहते हैं—कृष्ण वासुदेव और देवकी नन्दन गोप के कुमार (पुत्र) जो गोविन्द हैं उनके लिए मेरा नमस्कार है ॥ ३१ ॥

सोमदत्त उवाच ।

नमः परमकल्याणनमस्तेविश्वभावन ।
वासुदेवायशान्तायपशूनांपतयेनमः ॥३२॥

सोमदत्त कहते हैं—परम कल्याण रूप विश्व भावन

अर्थात् संसार के पालन कर्त्ता जो आप हैं उनको मेरा नमस्कार है और वासुदेव तथा शान्तरूप और पशुओं के पति जो आप हैं उनको मेरा नमस्कार है॥३२॥

विराट उवाच।

नमोब्रह्मण्यदेवायगोब्राह्मणहितायच॥
जगद्धितायकृष्णायगोविन्दायनमोनमः॥३३॥

विराट कहते हैं-गौ और ब्राह्मण के हित करने वाले ब्रह्मण्यदेव आपको नमस्कार है और जगत् के हितु कृष्ण तथा गोविन्द जो आप हैं उनको मेरा नमस्कार है॥३३॥

शल्य उवाच।

अतसीपुष्पसंकाशंपीतवाससमच्युतम्।
येनमस्यन्तिगोविन्दंनतेषांविद्यतेभयम्॥३४॥

शल्य कहते हैं--अलसी के फूल के समान जिनका रंग है और पीले वस्त्रों वाले अच्युत गोविन्द को जो नमस्कार करते हैं उनको भय नहीं॥३४

बलभद्र उवाच।

कृष्णकृष्णकृपालोत्वमगतीनांगतिर्भव।
संसारार्णवमग्नानांप्रसीदपुरुषोत्तम॥३५॥

बलदेवजी कहते हैं—हे कृष्ण हे कृष्ण, हे कृपालु! जिनकी गति नहीं उनकी तुमही गति हो और हे पुरुषोत्तम! संसार रूपी समुद्र में डूबे हुए जीवों पर आप प्रसन्न होइये ॥ ३५ ॥

श्रीकृष्ण उवाच।

कृष्णकृष्णेति कृष्णेतियोमांस्मरतिनित्यशः।
जलंभित्वा यथापद्मम् नरकादुद्धराम्यहम् ॥३६॥

श्रीकृष्ण जी कहते हैं—हे कृष्ण हे कृष्ण हे कृष्ण! ऐसे जो मुझे नित्य स्मरण करता है उसको मैं जैसे जलको फाड़कर कमल निकलता है वैसेही नरकसे निकाल लेता हूँ।

नित्यंवदामिमनुजाः स्वयमूर्ध्वबाहुर्योमां मुकुन्द-
नरसिंहजनार्दनेति॥जीवोजपत्यनुदिनंमरणे रणे
वा पाषाणकाष्ठसदृशायददाम्यभीष्टम् ॥ ३७ ॥

श्रीकृष्णजी औरभी कहते हैं—हे मनुष्यो! मैं सदा हाथ उठाकर कहता हूँ कि जो जीव मरण में व रण में मुकुंद नरसिंह जनार्दन इस प्रकार प्रतिदिन मुझे जपता है वह चाहे पाषाण वा काठ के समान भी होवे तो भी मैं उसको वांछित फल अर्थात् मुक्ति देता हूँ ॥ ३७ ॥

ईश्वर उवाच ।

सकृन्नारायणेत्युक्त्वापुमान्कल्पशतत्रयम् ॥
गङ्गादिसर्वतीर्थेषुस्नातो भवति पुत्रक ॥३८॥

ईश्वर कहते हैं ॥ हे पुत्र ! जो मनुष्य एक वार नारायण यह शब्द कहते हैं वह तीनसौ कल्प पर्यंत गंगा आदि सर्व तीर्थों के न्हाने का फल पाते हैं ॥ ३८ ॥

सूत उवाच ।

तत्रैव गंगा यमुनाच तत्रगोदावरी सिंधु
सरस्वती च ॥ सर्वाणि तीर्थानिवसन्ति-
तत्रयत्राच्युतोदारकथाप्रसंगः ॥३९॥

सूत कहते हैं कि॥ वही गंगा वही यमुना तथा वही गोदावरी वही सिंधु और सरस्वती है सब तीर्थ वहीं बसते हैं कि, जहां अच्युत अर्थात् भगवान का कथा प्रसंग होता है ॥ ३९ ॥

यमउवाच ॥

नरकेपच्यमानेतुयमेनपरिभाषितम् ॥
किन्त्वयानार्चितोदेवः केशवः क्लेशनाशनः॥

यम कहते हैं ॥ नरक में पडे हुए जीव से यम ने कहा क्या तूनें क्लेश के दूर करने वाले केशव भगवान् का पूजन नहीं किया ?॥ ४० ॥

नारद उवाच ।

जन्मान्तरसहस्रेणतपोध्यानसमाधिना ॥
नराणांक्षीणपापानांकृष्णेभक्तिः प्रजायते ॥४१॥

नारदजी कहते हैं। हजारों जन्मों में किये हुए तप और ध्यान की समाधि से क्षीण पापवाले मनुष्यों की भक्ति कृष्ण में उत्पन्न होती है ॥ ४१ ॥

प्रह्लाद उवाच ।

नाथयोनसहस्रषुयेषुयेषुब्रजाम्यहम् ॥
तेषुतेष्वचलाभक्तिरच्युतास्तुसदात्वयि ॥४२॥
याप्रीतिरविवेकानांविषयेष्वनुधारिणी ॥
त्वदनुस्मरणादेवत्हृदयादपसर्पति॥ ४३ ॥

प्रह्लाद और भी कहते हैं । हे नाथ ! जिन २ हजारों योनियों में मैं जाऊं अर्थात् जन्मलू हे अच्युत ! उन उनमें तुम्हारे में मेरी अचल भक्ति हो ॥४२॥ जो प्रीति अज्ञानी मनुष्यों की विषयों में रहती है वह तुम्हारे ध्यान मात्र ही से हृदय के बाहर हो जाती है॥४३॥

विश्वामित्र उवाच ।

किंतस्यदानैःकिंतीर्थैःकिंतपोभिः किमध्वरैः॥
योनित्यंध्यायतेदेवंनारायणमनन्यधीः ॥४४ ॥

विश्वामित्र कहते हैं ॥ जो उन्हींमें मन लगाकर नारायण का ध्यान करता है उसके दानों से क्या है और तीर्थों से क्या है और तपों से क्या है तथा यज्ञोंसे क्या है ॥ ४४ ॥

जमदग्निरुवाच।

नित्योत्सवोभवत्तेषांनित्यंनित्यंचमंगलम् ॥
येषांहृदिस्थोभगवान्मंगलायतनोहरिः ॥४५॥

जमदग्नि कहते हैं ॥ उन मनुष्यों के सदा उत्सव है और नित्य नित्य मङ्गल है जिनके हृदय में मंगल रूपी घर हरि भगवान स्थित हैं ॥ ४५ ॥

भरद्वाज उवाच।

लाभस्तेषांजयस्तेषांकुतस्तेषां पराजयः
येषामिन्दीवरश्यामोहृदयस्थेजनार्दनः ॥४६॥

भरद्वाज कहते हैं। उन्हींको लाभ है और उन्हीं की विजय है। जिनके हृदय में नील कमल के समान श्याम जनार्दन स्थित हैं उनकी पराजय कहां है ॥ ४६ ॥

गौतम उवाच।

गोकोटिदानंग्रहणेषुकाशीप्रयागगंगायुत-
कल्पवासः ॥ यज्ञायुतंमेरुसुवर्णदानं गोवि-
न्दनामस्मरणेन तुल्यम् ॥ ४७ ॥

गौतम कहते हैं। करोड़ गौ का दान और ग्रहण में काशी का स्नान और प्रयाग में दश हजार कल्प पर्य्यन्त वास करना और दश हजार यज्ञ करना और मेरु पर्वत की बराबर सुवर्णदान ये सब एक वार गोविन्द नाम के स्मरण की समान हैं॥ ४७॥

अग्निरुवाच।

गोविन्देतिसदास्नानंगोविन्देतिसदाजपः॥
गोविन्देतिसदाध्यानंसदागोविन्दकीर्त्तनम् ४८

अग्नि कहते हैं॥ गोविन्द नाम ही का उच्चारण सदा स्नान है और गोविन्द ही सदा जप है गोविन्द नाम ही का सदा ध्यान है और सदा गोविन्द ही का कीर्त्तन है॥ ४८॥

त्र्यक्षरंपरमंब्रह्मगोविन्देतित्र्यक्षरंपरम्॥
तस्मादुच्चरितंयेनब्रह्मभूयायकल्पते॥ ४९॥

गोविन्द ये तीन अक्षर परमब्रह्म रूप है इससे जो यह तीनों अक्षर उच्चारण करता है वह ब्रह्म में लय होजायगा॥ ४९॥

श्रीबादरायणिरुवाच।

अच्युतःकल्पवृक्षोऽसावनन्तः कामधेनवः॥
चिन्तामणिस्तुगोविन्दोहरेर्नामविचिंतयेत्।५०

श्री बादरायणि कहते हैं ॥ अच्युत यह नाम कल्प वृक्ष है और अनन्त यह कामधेनु है और गोविन्द यह चिन्तामणि है हरिका नाम चिंतवन करना चाहिए ॥५०॥

हरिरुवाच।

जयतुजयतुदेवोदेवकीनन्दनोयंजयतुजयतु कृष्णोवृष्णिवंशप्रदीपः ॥ जयतुजयतुमेघ-श्यामलः कोमलांगोजयतुजयतुपृथ्वीभार नाशोमुकुन्दः ॥ ५१ ॥

इन्द्र कहते है । जय होय जय होय देवकीके पुत्र देवकी जय होय जय होय, यदुवंशके प्रकाश करनेवाले कृष्णकी जय होय जय होय, मेघसमान श्याम कोमल अङ्गवालेकी जय होय जय होय, पृथ्वीके भार नाश करनेवाले मुकुंदकी जय हो जय हो ॥ ५१ ॥

पिप्पलायन उवाच।

श्रीमन्नृसिंहविभवेगरुडध्वजायतापत्रयोप-शमनायभवौषधाय ॥ कृष्णायवृश्चिकजला-ग्निभुजङ्गरोगक्लेशव्ययायहरयेगुरवेनमस्ते ॥

पिप्पलायन कहते हैं ॥ जिनकी ध्वजा में श्री सहित

नृसिंहरूप समर्थ और गरुड हैं और आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक इन तीनों भांतिके पापोंके दूर करने वाले संसार की औषधि ऐसे कृष्ण जी तथा विच्छू जल अग्नि साँप रोग इन क्लेशोंके दूर करने-वाले गुरु जो तुम हरि हो उनको नमस्कार हैं ॥ ५२ ॥

हविर्होत्र उवाच।

कृष्णत्वदीयपदपंकजपिंजरान्ते अद्यैव मे विशतु मानसराजहंसः ॥ प्राणप्रयाणसमये-कफवातपित्तैः कंठाऽवरोधनविधौस्मरणंकु-तस्ते ॥ ५३ ॥

हविर्होत्र कहते है ॥ हे कृष्ण! तुम्हारे चरणकमल रूपी पिंजरेमें मेरा मनरूपी राजहंस अभी प्रवेश करो प्राणोंकी यात्राके समय कफवातपित्त से कंठके रुकजानेमें तुम्हारा स्मरण कहाँ? ॥ ५३ ॥

विदुर उवाच।

हरेर्नामैव नामैवनामैव ममजीवनम् ॥
कलौनास्त्येवनास्त्येवनास्त्येवगतिरन्यथा ॥ ५४ ॥

विदुर कहते है ॥ हरि का नामही मेरा जीवन है कलियुगमें और प्रकारसे गति नहीं है ॥ ५४ ॥

वसिष्ठ उवाच।

कृष्णेतिमंगलंनामयस्य वाचाप्रवर्त्तते ॥
भस्मीभवन्तितस्याशुमहापातककोटयः ॥५५॥

वसिष्ठजी कहते हैं ॥ कृष्ण यह मंगल नाम जिसकी वाणीसे निकलता है उसकी वडे पाप करोडों शीघ्रही भस्म होजाते है ॥ ५५ ॥

अरुन्धत्युवाच।

कृष्णायवासुदेवाय हरयेपरमात्मने ॥
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमोनमः॥५६॥

अरुन्धती कहती हैं,कृष्ण वासुदेव हरि परमात्मा और शरणागत का क्लेश दूर करने वाले गोविन्द को वारम्वार मेरा नमस्कार है ॥ ५६ ॥

कश्यप उवाच।

कृष्णानुस्मरणादेवपाप संघट्टपंजरम् ॥
शतधाभेदमाप्नोतिगिरिर्वज्रहतोयथा ॥५७॥

कश्यप कहते हैं ॥ कृष्ण का स्मरण करने ही से पापों के समूह का पंजर सौ खंडों में इस प्रकार टूट जाता है जैसे वज्र का मारा हुआ पर्वत ॥ ५७ ॥

दुर्योधन उवाच।

जानामिधर्म्मंनचमेप्रवृत्तिर्जानामिपापंनचमे-
निवृत्तिः ॥ केनापिदेवेनहृदिस्थितेनयथा-
नियुक्तास्मितथाकरोमि ॥ ५८ ॥

दुर्योधन कहते हैं ॥ धर्म को जानता हूँ परन्तु मेरी प्रवृत्ति नहीं और पापको जानता हूँ परन्तु निवृत्ति नहीं हृदय में बैठे हुए किसी देव द्वारा जैसी प्रेरणा की गयी हो वैसा ही करता हूँ ॥ ५८ ॥

यन्त्रस्यममदोषेणक्षम्यतांमधुसूदन ॥
अहंयन्त्रंभवान्यन्त्रीममदोषोनदीयताम् ॥ ५९ ॥

यन्त्र जो शरीर है उसके गुण और दोष से हे मधुसूदन ! क्षमा करो मैं तो यन्त्र हूं और आप यन्त्री अर्थात् प्रेरक हो जो प्रेरणा करते हो सो करता हूँ ॥ ५९ ॥

भृगुरुवाच।

नामैवतवगोविन्दनामत्वत्तः शताऽधिकम् ॥
ददात्युच्चारणान्मुक्तिंभवानष्टांगयोगतः ॥ ६० ॥

भृगु कहते हैं ॥ हे गोविन्द तुम्हारा नाम ही तुम से सौगुणा अधिक है क्योंकि उच्चारण ही से मुक्तिको देता है और तुम अष्टांग योग से मुक्ति देते है ॥ ६० ॥

लोमश उवाच ।

नमामिनारायणपादपंकजं करोमिनारायण-
णपूजनंसदा ॥ वदामि नारायणनामनिर्मलं
स्मरामिनारायणतत्वमव्ययम् ।६१॥

लोमशऋषि कहते हैं ॥ नारायणके चरण कमल को नमस्कार करता हूँ और सदा नारायण का पूजन करता हूँ और निर्मल नारायण के नामका उच्चारण करता हूँ और अविनाशी नारायण रूपी तत्त्व का स्मरण करता हूं ॥ ६१ ॥

शौनक उवाच ॥

स्मृतेसकलकल्याणंभाजनंयत्रजायते ॥
पुरुषस्तमजंनित्यं व्रजामिशरणंहरिम् ॥६२॥

शौनक कहते हैं॥जिसका स्मरण करनेसे मनुष्य सब कल्याणों का पात्र होताहै मैं उस अजन्मा हरिके शरणमें जाताहूँ॥६२॥

गर्ग उवाच ।

नारायणेतिमन्त्रोऽस्तिवागस्तिवशवर्तिनी ॥
तथापिनरके घोरेपतन्तीत्यद्भुतंमहत् ॥६३॥

गर्ग कहते हैं। नारायण यह मंत्र विद्यमानहै और बाणी वशमें है उसपरभी मनुष्य घोरनरकमें पड़तेहैं यहबड़ा अचम्भाहै

दाल्भ्य उवाच।

किंतस्यबहुभिर्मंत्रैर्भक्तिर्यस्यजनार्द्दने ॥
नमोनारायणायेतिमन्त्रस्सर्वार्थसाधकः ॥६४॥

दाल्भ्य कहते हैं। जनार्द्दन भगवान में जिसकी भक्ति है उसको बहुत मंत्रों से क्या काम है 'नमो नारायणाय' यही मन्त्र सब स्वार्थों का साधने वाला है॥ ६४॥

वैशंपायन उवाच।

यत्रयोगेश्वरः कृष्णोयत्रपार्थो धनुर्द्धरः ॥
तत्रश्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥६५॥

वैशंपायन कहते हैं॥ जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं और धनुषधारी अर्जुन हैं वहाँ लक्ष्मी विजय और ऐश्वर्य तथा नीति है यह मेरी बुद्धि में निश्चय है॥ ६५॥

अग्निरुवाच।

हरिर्हरतिपापानिदुष्टचित्तैरपिस्मृतः ॥
अनिच्छयापिसंस्पृष्टोदहत्येवहिपावकः॥ ६६॥

अग्नि कहते हैं दुष्ट चित्तों द्वारा भी स्मरण किये गये हरि पापोंको हर लेते हैं जैसे अनिच्छा से भी स्पर्श किया अग्नि जलाही देता है॥ ६६॥

परमेश्वर उवाच।

सकृदुच्चरितंयेन हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
बद्धःपरिकरस्तेनमोक्षायगमनंप्रति ॥ ६७॥

परमेश्वर कहते हैं॥ जिसने हरी इन दोनों अक्षरों का

एक बार भी उच्चारण किया उसीने मोक्ष को जानेके लिये फेट बांधी यह मानलो॥ ६७ ॥

पुलस्त्य उवाच।

हेजिह्वेरससारज्ञेसर्वदामधुरप्रिये॥
नारायणाख्यपीयूषंपिबजिह्वेनिरन्तरम्॥६८।

पुलस्त्य कहते हैं॥ हे रसके सारकी जानने वाली जीभ जिसे सदा मीठा प्यारा लगता है। नारायण नाम अमृत का तू सदा पान कर॥ ६८॥

व्यास उवाच।

सत्यंसत्यंपुनस्सत्यंसत्यंसत्यंवदाम्यहम्॥
नास्तिवेदात्परंशास्त्रंन देवः केशवात्परः ६९॥

व्यास कहते हैं॥ सत्य है सत्य है मैं वारम्बार कहताहूँ कि वेद से परे कोई और देव नहीं है॥ ६९॥

धन्वतरिरुवाच।

अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारणभेषजम्॥
नश्यन्तिसकलारोगास्सत्यंसत्यंवदाम्यहम्॥७०।

धन्वन्तरि कहते हैं॥अच्युत अनन्त गोविन्द इन नामोंका उच्चारण औषधि है इससे सब रोग दूर होते हैं यह मैं सत्य सत्य कहता हूं॥ ७०॥

मार्कण्डेय उवाच।

स्वर्गदंमोक्षदंदेवं सुखदंजगतोगुरुम्॥

कथंमुहूर्त्तमपितंवासुदेवन्नचिंतयेत् ॥ ७१ ॥

मार्कण्डेय कहते हैं स्वर्ग मोक्ष तथा सुख के देने वाले जगत् के गुरु उन वासुदेवको क्षणमात्र भी क्यों नहीं चिंतवन करता है॥

अगस्त्य उवाच ।

निमिषंनिमिषार्द्धंवाप्राणिनांविष्णुचिन्तनम् ॥
तत्रतत्रकुरुक्षेत्रंप्रयागंनैमिषंवनम् ॥ ७२ ॥

अगस्त्य कहते हैं। प्राणियों को एक पल वा आधे पल जो विष्णुका चिंतवन है वही कुरुक्षेत्र प्रयाग तथा नैमिषारण्य क्षेत्र है ॥ ७२ ॥

वामदेव उवाच ।

निमिषंनिमिषार्द्धंवाप्राणिनांविष्णुचिन्तनम् ॥
कल्पकोटिसहस्राणिलभतेवांछितंफलम् ॥७३॥

वामदेव कहते हैं॥एक पल व आधे पल जो विष्णुका ध्यानहै उससे करोड़ कल्पवासका वांछित फल मिलताहै ॥ ७३ ॥

शुक उवाच ।

आलोडयसर्वशास्त्राणिविचार्य्य च पुनः पुनः॥
इदमेकंसुनिष्पन्नंध्येयोनारायणस्सदा ॥७४॥

शुकजी कहते हैं॥ सब शास्त्रोंको आलोचन कर और बारम्बार विचार करके मुझे यही निश्चय हुआ है कि नारायण हरिका ध्यान करना ही उचित है ॥ ७४ ॥

श्रीमहादेव उवाच ।

शरीरेजर्ज्जरीभूतेव्याधिग्रस्तेकलेवरे ॥
औषधंजाह्नवीतोयंवैद्योनारायणोहरिः ॥७५॥

श्रीमहादेवजी कहते हैं ॥ शरीर के जीर्ण होने और रोगों के ग्रसने के लिये गंगाजल तौ औषधि है और नारायण हरि वैद्य हैं ॥ ७५ ॥

शौनकउवाच ।

भोजनेछादनेचिन्तांवृथाकुर्वन्तिवैष्णवाः॥
योऽसौविश्वम्भरोदेवस्सकिंभक्तानुपेक्षते।७६।

नकशौ कहते हैं । वैष्णव भोजन और वस्त्र की चिन्ता वृथा करते हैं क्योंकि जो यह संसार का पालने वाला है. वह भक्तों की कैसे उपेक्षा करैगा ॥७६॥

सनत्कुमार उवाच ।

यस्यहस्तेगदाचक्रंगरुडोयस्यवाहनम् ॥
शंखचक्रगदापद्मोसमेविष्णुः प्रसीदतु ॥७७।

सनत्कुमार कहते हैं जिनके हाथ में गदा और चक्र है तथा गरुड़ जिनके वाहन हैं और शंख चक्र गदा और पद्म जिनके हाथमें है सो मेरे ऊपर प्रसन्न होओ ॥७७॥

एवंब्रह्मादयो देवऋषयश्च तपोधनाः ।
कीर्त्तयन्तिसुर श्रेष्ठमेवं नारायणंविभुम्॥७८॥

ऐसे ब्रह्म आदि देवता और तपस्वी ऋषि देवताओं में श्रेष्ठ एक नारायण प्रभु का कीर्त्तन करते हैं ॥ ७८ ॥

इदंपवित्रमायुष्यंपुण्यंपापप्रणाशनम् ।
दुःस्वप्ननाशनंस्तोत्रंपांडवैःपरिकीर्तिम् ॥७९॥

यह पवित्र तथा आयुष्य बढ़ानेवाला पवित्र तथा पावक तथा दुःखका नाश करनेवाला स्तोत्र पांडवों द्वारा कहा गयाहै

यः पठेत्प्रातरुत्थायशुचिस्तद्गतमानसः ॥ गवां-
शतसहस्रस्यसम्यग्दत्तस्ययत्फलम् ।८०।तत्फलंस
मवाप्नोतियःपठेदितिसस्तवम।सर्वपापविनिर्मुक्तो
विष्णुलोकंसगच्छति । ८१॥

जो प्रातःकाल उठकर शुद्ध हो उनमें मन लगाकर पाठ करताहै वह अच्छी भांति दी हुई लाख गौओंका फल पाता है और जो इस स्तोत्रका पाठ करता है वह सब पापों से छूट कर विष्णुलोकको जाता है ॥ ८० ॥ ८१ ॥

गंगागीताचगायत्रीगोविन्दोगरुड़ध्वजः ॥
चतुर्गकारसंयुक्तः पुनर्जन्मनविद्यते ॥८२॥

गंगा गीता और गायत्री गोविन्दगरुड़ध्वज इन चार गकारोंका उच्चारण करें तो उसका फिर सँसारमें जन्म न हो अर्थात मुक्ति पाता है ॥८२॥

गीतां यःपठतेनित्यं श्लोकार्द्धं श्लोकमेव च ।
मुच्यते सर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति।८४॥

गीताका जोनित्य पाठकरे वा एकश्लोकका वा आधेश्लोकका पाठकरे वह सब पापोंसे मुक्तहो विष्णुलोक को जाता है ॥८३॥

* इति श्रीपाण्डव गीता भाषा टीका समाप्त शुभम् *

❀ कुछ उत्तम पुस्तकों का सूचीपत्र ❀

——:(❀):——

अवधूत गीता भा० टी०	॥)	विष्णु सहस्रनाम भा० टी०	।)
शिवस्वरोदय „	।≈)	गोपाल सहस्रनाम „	।)
स्वरोदयसार „	≈)	भर्तृहरिशतक „	।॥)
ज्ञान स्वरोदय „	—)॥	रम्भाशुक सम्वाद „	—)॥
शीघ्र बोध भा० टी०	।≈)	गीत गोविन्द „	॥)
आत्म बोध „	।)	दत्तात्रेय तन्त्र „	॥)
सत्य बोध „	≈)॥	उड्डीशतन्त्र „	॥)
नारद गीता „	—)	पद्यपंचाशिका „	।)
प्रश्नोत्तरी „	—)	पद्म कोश „	≈)
चर्पटपंजारिका भा० टी०	—)	लघुपाराशरी „	≈)
गीता भाषा	॥)	चमत्कार चिंतामणि „	≈)
चाणक्य नीति दर्पण „	≡)	भविष्यफल पड़ा	।)

मिलने का पता—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद,

बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा

मुद्रक—द्वारकाप्रसाद भरतिया ने अपने बम्बई भूषण यन्त्रालय मथुरा में मुद्रित किया